



॥ श्री वायु देव चालीसा ॥
॥ ॐ वायवे नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री वायु देव चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

श्री पवन प्रभु देव को, करूँ हृदय से ध्यान।
प्राणस्वरूप कृपालु प्रभु, हरो सकल अज्ञान॥
मंगलमय हो जीवन, मिटें सभी संताप।
कृपा करो हे वायु प्रभु, पूर्ण करो सब ताप॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय वायु भगवान।
प्राणस्वरूप सकल कल्याण॥
पंचमहाभूतन में न्यारे।
जीवनदाता परम दुलारे॥

जग के प्राण तुम्हीं कहलाते।
चर-अचर में शक्ति जगाते॥
सूर्य चन्द्र के तुम सहचारी।
धरा गगन के पालनहारी॥

शीतल मंद समीर बहाते।
सबके मन को सुख पहुँचाते॥
मेघों को आकाश चलाते।
धरती पर अमृत बरसाते॥

वन उपवन हरियाली लाते।
जीवन में नव चेत जगाते॥
तन में प्राण तुम्हीं बसते हो।
हर श्वास में साथ ही रहते हो॥

योगी तुमको ध्यान लगाते।
प्राणायाम से सिद्धि पाते॥
ऋषि-मुनि सब गुण गाते तेरे।
भक्त बने हैं सदा ही चेरे॥

दीन दुखी पर दया दिखाते।
संकट सबके दूर भगाते॥
रोग दोष सब दूर कराते।
तन-मन में नव बल भर जाते॥

निर्बल को बलवान बनाते।
सज्जन पथ पर सदा चलाते॥
संकट में तुम साथ निभाते।
भक्तों की लाज सदा बचाते॥

शुद्ध पवन से जीवन चलता।
तुम बिन जग का दीप न जलता॥
तुमसे अग्नि प्रज्वलित होती।
तुमसे जल में गति संजोती॥

पर्वत वन और सागर सारे।
मानें आदेश तुम्हारे॥
देव, दनुज, नर सब गुण गावें।
वायु कृपा सब सुख पावें॥

शुभ विचार हृदय में भर दो।
ज्ञान भक्ति का दीप धर दो॥
क्रोध लोभ मद दूर भगाओ।
सत्य धर्म का मार्ग दिखाओ॥

भक्ति भाव जो तुम्हें ध्यावे।
सुख-सम्पत्ति सहज ही पावे॥
घर में शांति सदा बस जाए।
दुःख दरिद्रता दूर भगाए॥

संतान, धन, यश और विद्या।
दो प्रभु अपनी दिव्य सिद्ध्या॥
प्राणस्वरूप दयालु स्वामी।
करो कृपा अन्तर्यामी॥

जो यह चालीसा नर गावे।
मनवांछित सब फल वह पावे॥
अन्त समय हरि धाम सिधारे।
वायु कृपा से भवसागर तारे॥

॥ दोहा ॥

वायु देव की आराधना, जो श्रद्धा से गाए।
प्राण, बल, आरोग्य, सुख मिले, जीवन सफल बनाए॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥